5. राधा कमल मुखर्जी :—

सामाजिक मूल्यों का सिद्धांत :—

राधा कमल मुखर्जी का जन्म 7 दिसंबर 1889 को 'बरहागपुर' मुर्शिदाबाद प० बंगाल में हुआ। 1968 में इनकी मृत्यु हो गई।

डॉ राधा कमल मुखर्जी ने "दी सोशल स्ट्रक्चर ऑफ Values" तथा Dymention of Values नामक पुस्तकों में सामाजिक मूल्यों से संबंधित विचारों को प्रस्तुत किया है। राधा कमल मुखर्जी के द्वारा विदेश में प्रभुत्वता का कारण उनके द्वारा प्रतिपादित सामाजिक मूल्यों का सिद्धांत है। इस सिद्धांत में हमें पूर्व एवं पश्चिम के विचारधाराओं का एक सुंदर समागम देखने को मिलता है। "social structure of values" नामक पुस्तक में राधा कमल मुखर्जी ने मूल्यों के समाजशास्त्रीय सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। इसके अंतर्गत उन्होंने मूल्यों की उत्पति एवं विकास मूल्यों के मनोवैज्ञानिक नियमों तथा मूल्यों की सुरक्षा आदि पर विचार व्यक्त किये हैं। दूसरी पुस्तक "The Dymention of Values" में इन्होंने ने मूल्यों के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया है। जिसके अंतर्गत जीव विज्ञान, मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र

Scanned with CamScanner

आदि में पाये जाने वाले मूल्यों की सबल्ता को प्रस्तुत किया है जिसे एक अंतः वैज्ञानिक उपागम कहा जा सकता है। इन्होंने मूल्यों के संदर्भ में विभिन्न जीवशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों एवं समाज-वैज्ञानिकों के योगदान का भी इस पुस्तक में उल्लेख किया है इनका मानना था कि जब तक मूल्यों के बारे में कोई सार्वभौमिक सामान्य विचारधारा प्रति-पादित नहीं कर ली जाती तब तक वास्तविक समृद्धि असंभव है।

राधा कमल मुखर्जी सम्पूर्ण सामाजिक संगठन और सरंचना का आधार मूल्यों को मानते हैं। वे मूल्यों व्यक्ति और समाज को परस्पर संबंधित मानते हैं उनका मानना है कि उनके पारस्परिक आदान-प्रदान से ही व्यक्ति सम्पूर्ण बनता है। व्यक्ति ऐसी स्थिति में समाज से अलग नहीं रह सकता बल्कि उसे समाज के साथ ही चलना होता है। मुखर्जी का मानना था कि व्यक्ति मूल्यों का सृजन भी करता है और उन्हें पूर्ण भी करता है। व्यक्ति मूल्यों का उद्गम स्रोत ही नहीं होता बल्कि वह मूल्यों का निर्माण भी करता है जो कि समूहों और संस्थाओं की समान्य कार्य प्रणाली में अंतर्व्यक्ति

संबंधों, मूल्यों, लक्षणों और व्यवहारों में समाहित होता है।

राधा कमल मुखर्जी के प्रयासों से भारत में मूल्यों का अध्ययन करने के लिए एक विशेष शाखा का विकास हुआ जो मूल्यों के समाजशास्त्र नाम से जानी जाती है इस शाखा में मूल्यों तथा समाज का अध्ययन किया जाता है प्रत्येक समाज में कुछ आदर्श होते हैं और उन्हीं आदर्शों के आधार पर समाज की प्रगति का आकलन किया जाता है इन्हीं मूल्यों के आधार पर यह निर्धारित होता है कि समाज में उचित अनुचित एवं महत्वपूर्ण नहीं है या क्या महत्वपूर्ण है। प्रत्येक समाज के सामाजिक मूल्य अन्य सामाजों के सामाजिक मूल्यों से अलग-अलग होते हैं। इन्हीं मूल्यों के आधार पर व्यक्ति के व्यवहारों की परीक्षा ली जाती है और व्यक्ति का व्यक्तिगत व्यवहार के आधार पर ही उसके सामाजिक जीवन का निर्धारण होता है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक मूल्य अर्थ एवं परिभाषा :—

राधा कमल मुखर्जी ने मूल्यों की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया है कि मूल्य मानव समूहों और व्यक्तियों के द्वारा प्राकृतिक और सामाजिक संसार से सामंजस्य स्थापित करने का उपकरण है। मूल्य ऐसी प्रतिमान है जो मनुष्य के विभिन्न आवश्यकताओं के पूर्ती हेतु मार्गदर्शन करते हैं, तथा इसकी रक्षा के लिए समूह के सदस्य हर संभव त्याग करने को तत्पर रहते हैं मूल्य एक प्रकार के सामूहिक लक्षण होते हैं जिनके प्रति सदस्यों को स्वाभाविक आस्था होती है वे मूल्यों को परिभाषित करते हुए यह लिखते हैं कि "मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्षण हैं जिनका आंतरिकरण सीखने या सामाजिक घटन की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो प्राकृतिक अधिक मान्यताएँ मानक तथा अभिलाषाएँ बन जाती है।"

जानसन के अनुसार — "मूल्यों को एक मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा व्यक्तियों की एक साथ तुलना की जा सकती है और वे एक दूसरे के संदर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती है जो कि अच्छी या बुरी अधिक या कम उचित मानी जाती है। जानसन का मत है कि "मूल्यों के द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है। जिसमें सभी प्रकार के वस्तु, भावना, विचार, क्रिया, गुण पदार्थ, व्यक्ति, समूह, लक्ष्य एवं साधन आदि का

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन किया जाता है।

फीचर के अनुसार — "समाजशास्त्रीय दृष्टि से मूल्यों को उनकी कसौटी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके द्वारा समूह या समाज व्यक्तियों प्रतिमानों उद्देश्यों और सामाजिक सांस्कृतिक वस्तुओं के महत्व का निर्णय करते हैं इस प्रकार मूल्य वे कसौटियाँ हैं जो कि सम्पूर्ण सांस्कृतिक एवं समाज को अर्थ प्रदान करते हैं।

हारालाम्बोस के अनुसार " एक मूल्य एक विश्वास है जो यह बताता है कि क्या अच्छा और वांछनीय है या परिभाषित करता है कि क्या महत्वपूर्ण है, लाभप्रद है और प्राप्त करने योग्य है"।

वुड्स ने बताया कि सामाजिक मूल्य वे ~~मानक~~ सिद्धांत है जो दिन-प्रतिदिन जो दिन प्रतिदिन के जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करते है। ये मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करने के साथ-साथ अपने आप में आदर्श एवं उद्देश्य भी है। सामाजिक मूल्य वे मूल्य या धारणाएं हैं जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, वस्तु के गुण, लक्षण, साधन एवं भावनाओं आदि को उचित या अनुचित अच्छा या बुरा ठहराता है। मूल्य एक प्रकार से सामाजिक

माप या पैमाना है जिसके आधार पर किसी वस्तु का मूल्यांकन किया जाता है इन मूल्यों को व्यक्ति सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा सीखता है और आन्तरीकृत करता है तथा उन्हीं के अनुसार आचरण करने की वांछता है। सामाजिक मूल्यों को प्राप्त करना व्यक्ति की इच्छा बन जाता है। सामाजिक मूल्यों का निर्माण सम्पूर्ण समूह एवं समाज के सदस्यों की पारस्परिक अन्तः क्रिया के दौरान होता है। अतः वे सारे समूह या समाज की वस्तु है। समाज एवं संस्कृति में भिन्नता के कारण ही सामाजिक मूल्यों में भी भिन्नता पायी जाती है। सामाजिक मूल्यों को और अधिक स्पष्टता समझने के लिए यहाँ हम उनकी प्रमुख विशेषता का उल्लेख करेंगे—

सामाजिक मूल्यों की विशेषता :—

(1) सामाजिक मूल्य सामूहिक होते है :— सामाजिक मूल्यों का संबंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता है बल्कि ये सारे समूह एवं समाज की धरोहर होते है और सारे समूह की ~~इन्हीं~~ इन्हें मान्यता प्राप्त होती है। इनका निर्माण किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं किया जाता बल्कि ये सामूहिक अन्तः क्रिया की उपज एवं परिणाम

Scanned with CamScanner